पहला तिमुथियुसः परमेश्वर का घर

सुसमाचार और भौतिकता – भाग 1

डॉ. डेविड प्लैट

9 अक्टुबर, 2011

सुसमाचार और भौतिकता – भाग 1

1 तिमुथियुस 6:3–10

यदि आपके पास बाइबल है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ 1 तिमुथियुस 6 निकालें। हम सबके जीवनों में अन्धेरे क्षेत्र होते हैं। हमारे जीवनों के वे क्षेत्र जिनमें हम सोचते हैं कि हम सही हैं, लेकिन यथार्थ में, हम धोखे में होते हैं। यह एक आसान तस्वीर है, जिसका उदाहरण वाहन चलाने के संबंध में दिया जा सकता है। जब आप शीशे में देखते हैं तो आपको लगता है कि आप अपने पथ से दूसरे पथ पर जा सकते हैं, और अपनी गाड़ी को दूसरे पथ की ओर ले जाने लगते हैं, और आपको पता नहीं है कि आपके बराबर ही दूसरी गाड़ी चल रही है। वे हॉर्न बजाने लगते हैं और आप वापस एक झटके के साथ अपने पथ पर आ जाते हैं और सोचने लगते हैं, "मैं उसे देखने से कैसे चूक गया? वे मेरे बराबर चल रहे थे। मैं ने उन्हें नहीं देखा।" यह एक अन्धेरा क्षेत्र है।

पिछले सप्ताह, हमने पाश्चात्य मसीही इतिहास के सबसे बड़े काले धब्बों में से एकः दास प्रथा के बारे में बात की थी। मसीही लोग हर सप्ताह आराधना करने, गीत गाने और बाइबल का अध्ययन करने के लिए एकत्रित होते थे, और साथ ही पुरूषों, स्त्रियों और बच्चों का संपत्ति के रूप में, दासों के रूप में उपयोग और दुरूपयोग करते थे। वास्तव में उनका मानना था कि बड़े दिन पर एक अतिरिक्त मुर्गी और धन्यवाद देने के कारण वे उनके प्रति उदार थे। यह अहसास भयानक है कि अच्छे इरादे, नियमित आराधना, और साप्ताहिक बाइबल अध्ययन भी हमारे अन्दर के अन्धेपन को पूरी तरह से दूर नहीं करते हैं। हमारे पापी स्वभाव में कुछ ऐसा है जो नैसर्गिक रूप से वही देखता है जो हम देखना चाहते हैं और उसे अनदेखा करता है जिसे हम अनदेखा करना चाहते हैं, जब तक कि बहुत देर न हो जाए।

अतीत के काले दागों को देखना आसान है परन्तु वर्तमान में उन्हें देखना बहुत कठिन है। अतः, पिछले सप्ताह हमने गुलामी के बारे में सोच–विचार किया, और हमने सोच–विचार किया कि कैसे हम से पहले ऐसे समुदायों में जाने वाले हमारे भाई–बहन इसे देखने में पूरी तरह से चूक गए। उनका उदाहरण हमें इस सवाल को पूछने का संकेत देता है, "तो क्या आज हमारे जीवनों में अन्धेरे क्षेत्र हैं? क्या ऐसे क्षेत्र हैं जिनके बारे में परमेश्वर का वचन स्पष्ट है, लेकिन हम उससे चूक रहे हैं?" मेरे विचार से ऐसा ही है।

अपनी आँखें खोलो...

संसार की अत्यावश्यक आत्मिक जरूरत को देखो।

अपनी आँखें खोलो। यह कोई नई बात नहीं है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, परन्तु मेरा मानना है कि यहीं पर 1 तिमुथियुस 6 हमारे जीवनों, हमारी कलीसिया, और हमारी संस्कृति के उन अन्धेरे क्षेत्रों पर रोशनी डालता है जिन्हें हम भूल जाते हैं। अपनी आँखें खोलो और संसार की अत्यावश्यक आत्मिक जरूरत को देखो।

संसार में छह अरब अस्सी करोड़ लोग हैं। सर्वाधिक उदार अनुमानों के अनुसार संसार की लगभग एक तिहाई जनसंख्या मसीही है, बहुत से मामलों में मसीही होने का दावा करने वाले लोग सामाजिक या राजनैतिक पहचान के रूप में उसका प्रयोग करते हैं, लेकिन यदि हम उन सबको मसीह के वास्तविक अनुयायी मान भी लें, तो भी संसार में लगभग साढ़े चार अरब से अधिक लोग ऐसे हैं जो मसीह के बिना जी रहे हैं और अनन्त नरक के मार्ग पर जा रहे हैं। उनमें से लगभग दो अरब लोगों के पास इस समय यह सुसमाचार नहीं है जिसे हम गाते हैं और आनन्द मनाते हैं। यह अत्यावश्यक आत्मिक जरूरत है।

इसका एक उदाहरण देखें। पिछले सप्ताह मैं एक व्यक्ति से बात कर रहा था जो भारत में बिहार में रहता है, जो संसार के सबसे गरीब लोगों का स्थान है और एक ऐसा स्थान है जहाँ बहुत कम सुसमाचार पहुँचा है। यह अत्यधिक उजाड़ है! शारीरिक कष्ट और विशाल आत्मिक गरीबी। .01 प्रतिशत से भी कम सुसमाचारीय मसीही हैं। भारत के इस क्षेत्र में मृत्युदर लगभग 5,000 व्यक्ति प्रतिदिन है, जिसका मतलब यह है कि प्रतिदिन लगभग 4950 लोग अनन्त नरक में चले जाते हैं। उनमें से अधिकाँश लोगों ने कभी सुसमाचार नहीं सुना है। अतः, संसार की अत्यावश्यक आत्मिक जरूरत को देखें।

संसार की अत्यावश्यक भौतिक जरूरत को देखो।

एक मिनट के लिए संसार की अत्यावश्यक आत्मिक जरूरत को महसूस करें, और संसार की अत्यावश्यक भौतिक जरूरत को देखें। आज, एक अरब से अधिक लोग एक डॉलर से भी कम आय पर अत्यन्त गरीबी में जी और मर रहे हैं। इनके अतिरिक्त लगभग दो अरब लोग प्रतिदिन दो डॉलर से भी कम पर जीवन निर्वाह कर रहे हैं। लगभग आधी दुनिया भोजन, जल, आवास और चिकित्सकीय देखभाल के लिए संघर्ष कर रही है। आज बीस हजार से अधिक बच्चे भुखमरी या निवारणीय बीमारी के कारण मर जाएँगे।

एक विशिष्ट उदाहरण इस प्रकार है। इस समय सोमालिया पर विचार करें। इस समय, सोमालिया में लगभग साढ़े सात लाख लोग भुखमरी की कगार पर हैं और शायद वे अगले कुछ महीने भी नहीं जी पाएँगे। उनमें से अधिकाँश लोग मसीह के बिना जी रहे हैं। न केवल वे गरीब हैं, बल्कि वे निःशक्त भी हैं। अरबों लोग गुमनामी के अन्धेरे में जी और मर रहे हैं जबकि हम अपनी संपन्नता में आराम से उन्हें अनदेखा कर सकते हैं। यदि हम ईमानदार हैं तो हम मान लेंगे कि हम ऐसे जीते हैं जैसे कि उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है।

कलीसिया में राज्य के अत्यधिक अवसरों को महसूस करो।

संसार की अत्यावश्यक आत्मिक और भौतिक जरूरत को देखने के लिए अपनी आँखें खोलो। उसे देखो। उसे महसूस करो। और फिर, कलीसिया में राज्य के अत्यधिक अवसरों को महसूस करो। दूसरी तरफ, हम धनवान हैं। हम धनवान हैं। आपको शायद हमेशा यह महसूस न हो कि आप धनवान हैं, लेकिन आपके पास भोजन, जल और वस्त्र हैं। यदि आप 25,000 डॉलर प्रतिवर्ष कमाते हैं, तो आप संसार के सर्वाधिक धनवान दस प्रतिशत लोगों में से एक हैं। परमेश्वर ने हमें इतना अधिक दिया है, फिर भी हम उसके साथ क्या कर रहे हैं जो परमेश्वर ने हमें दिया है? उत्तरी अमरीका के मसीही अपनी आय का औसतन 2.5 प्रतिशत भाग कलीसिया को देते हैं, जो मेरे विचार से एक उदार अनुमान है, लेकिन हम इसी को मानेंगे। फिर, उत्तरी अमरीका की कलीसियाएँ अपने धन का औसतन दो प्रतिशत भाग संसार की जरूरतों के लिए, विदेशी मिशन के लिए देती हैं। आप इसे एक साथ जोड़ें, इसका मतलब है कि उत्तरी अमरीकी मसीही द्वारा कमाए गए प्रत्येक 100 डॉलर में हम पाँच सेन्ट शेष संसार को देते हैं। पाँच सेन्ट! यह बड़े दिन पर गुलामों को दी जाने वाली अतिरिक्त मुर्गी या धन्यवाद के समान ही है।

मैं सोचता हूँ, यदि मसीह के आगमन में देरी होती है, तो आज से लगभग सौ वर्षों के बाद मसीह के अनुयायी आज अमरीका में रहने वाले मसीहियों की ओर देखकर कहेंगे, "वे ऐसी संपन्नता में कैसे जी सकते थे, जब अरबों लोग भुखमरी के शिकार हो रहे थे, और उनमें से बहुतों ने मसीह का नाम भी नहीं सुना था? वे अपनी कलीसियाओं को अधिक वस्तुओं और अधिक कार्यक्रमों और अधिक आरामदायक बातों से कैसे भर सकते थे, जबकि संसार की दूसरी ओर उनके भाई–बहन कुपोषित शरीरों और विरूप मस्तिष्कों के कारण मर रहे थे? वे ऐसे कैसे जी रहे थे जैसे कि चार अरब लोगों का कोई अस्तित्व ही नहीं था? यदि परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए साधनों का उन्हें अहसास हो जाता, तो क्या होता? यदि अत्यावश्यक आत्मिक एवं भौतिक जरूरत वाले संसार में वे पूरे दिल से, बिना किसी लज्जा के, संस्कृति के पार, सुसमाचार के प्रसार और परमेश्वर की महिमा के लिए अपने जीवनों और अपने संसाधनों और अपने परिवारों को दे देते, तो वे संसार में किस बात का हिस्सा बन सकते थे?"

मैं उसी जगह पहुँचना चाहता हूँ। मैं अपने परिवार को वहीं पर ले जाना चाहता हूँ, और मैं परमेश्वर द्वारा संसार में अपनी महिमा के लिए हमें दिए गए अत्यधिक अवसरों का अनुभव करने के लिए कलीसिया की अगुवाई में भागीदार बनना चाहता हूँ, चाहे उसकी कीमत जो भी हो, और मैं दो कारणों से वहाँ रहना चाहता हूँ।

पहला, क्योंकि परमेश्वर के वचन के द्वारा मुझे निश्चय है कि जब हम हमारे जीवनों को अत्यधिक खर्चीले रूप से दे देते हैं, जब हम अपनी संपत्तियों को अत्यधिक खर्च करते हैं, तो न केवल हम आत्मिक और शारीरिक रूप से जीने में दूसरों की अगुवाई करेंगे, परन्तु व्यक्तिगत रूप से हमें पता चलेगा कि सच्चा आनन्द और सच्ची खुशी कहाँ पाई जाती है। ऐसा आनन्द और ऐसी खुशी जिसका कभी अन्त न होगा। और राज्य के इन अत्यधिक अवसरों का अनुभव करने की इच्छा का दूसरा कारण यह है क्योंकि यदि हम संसार में परमेश्वर की महिमा के लिए अपने आप को और हमारी संपत्तियों को पूरी तरह से नहीं देते हैं, तो लोग निरन्तर आत्मिक और शारीरिक रूप से मरते रहेंगे। यदि हम अपने जीवनों और अपनी संपत्तियों को पूरी तरह से नहीं देते हैं, तो हम अपने आप को व्यक्तिगत रूप से ऐसे मार्ग पर पाएँगे जो बर्बादी और विनाश की ओर ले जाता है। विनाश जिसका कभी अन्त न होगा। मैं 1 तिमुथियुस 6 में आपको इसे दिखाता हूँ।

अब, बात यह है। मैं संसार की ओर आपकी नजरों को उठाते हुए यहाँ पर आँकड़ों से शुरू कर रहा हूँ क्योंकि हमें यह महसूस करने की आवश्यकता है, कि संसार हमारी कलीसियाई मण्डली जैसा नहीं दिखता

है। हमें यह याद रखने की जरूरत है। हमें यह महसूस करने की जरूरत है कि परमेश्वर ने हमें क्या दिया है। वास्तविकता यह है कि यदि संसार भर में बच्चों के बीच में जो हो रहा है वह यदि हमारे समुदाय में होता, तो 18 वर्ष से कम की आयु का प्रत्येक बालक जा चुका होता। अतः, हमें संसार को देखने की जरूरत है, लेकिन उससे भी बढ़कर, हमें वचन को देखने की जरूरत है। हमें वचन को देखने की जरूरत है क्योंकि हमें यह देखना है कि वचन भौतिकता से कैसे लड़ता है, आँकड़ों या कहानियों से नहीं, परन्तु मसीह के सत्य से। यह मुख्य है क्योंकि आँकड़े और कहानियाँ यद्यपि सहायक हैं, लेकिन आँकड़े और कहानियाँ हमें बदलते नहीं हैं। केवल मसीह ही हमें बदलेगा, और मेरी प्रार्थना है कि वह आपको पूरी तरह से बदल दे।

अपने दिलों को देखो...

अतः, अपनी आँखें खोलो और अपने दिलों को देखो। 1 तिमुथियुस 6:3–10:

> *यदि कोई और ही प्रकार का उपदेश देता है; और खरी बातों को, अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातों को और उस उपदेश को नहीं मानता, जो भक्ति के अनुसार है। तो वह अभिमानी हो गया, और कुछ नहीं जानता, वरन् उसे विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है, जिन से डाह, और झगड़े, और निन्दा की बातें, और बुरे–बुरे सन्देह और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े–झगड़े उत्पन्न होते हैं, जिन की बुद्धि बिगड़ गई है और वे सत्य से विहीन हो गए हैं, जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है। पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं। और यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए। पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुतेरी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फँसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डूबा देती हैं। क्योंकि रूपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।*

यहाँ पौलुस इफिसुस में झूठे शिक्षकों के संबंध में तिमुथियुस से बात करता है, और आप देखेंगे कि वह "लालसा" शब्द का प्रयोग दो बार नकारात्मक रूप में करता है। आप उन पर निशान लगा सकते हैं। पहले, पद चार में वह इसका प्रयोग करता है। पद चार में वह कहता है, *"उसे विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है, जिन से डाह, और झगड़े, और निन्दा की बातें, और बुरे–बुरे सन्देह और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े–झगड़े उत्पन्न होते हैं।"* यह चौथा वचन है। आप पद दस पर आएँ, *"क्योंकि रूपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।"* अतः, इन दोनों अस्वस्थ लालसाओं के आधार पर मैं दो तरह से हमारे दिलों पर नजर रखने के लिए हमें प्रोत्साहित करना चाहता हूँ।

आत्मिक विभाजन की लालसा न करो।

पहला, बाइबल कहती है, आत्मिक विभाजन की लालसा न करो। अतः, पौलुस यहाँ उन लोगों को संबोधित कर रहा है जो विभिन्न प्रकार के सिद्धान्तों को सिखाते हैं, जिनके कलीसिया में विभाजन होता है, और वह हमें यह कहते हुए सतर्क करता है कि, झूठे शिक्षक अज्ञानता और अहंकार से प्रेरित होते हैं। चौथे वचन में, झूठा शिक्षक छल से भरा है, और वह कुछ नहीं समझता है। वह अहंकारी और अज्ञानी है। यह एक अच्छा मिश्रण नहीं है। वह अहंकारी है क्योंकि वह अपनी शिक्षा को परमेश्वर के वचन से श्रेष्ठ मानता है, और वह अज्ञानी है क्योंकि उसकी शिक्षा सत्य नहीं है। पौलुस कहता है, झूठे शिक्षक अज्ञानता और अहंकार से प्रेरित होते हैं, और ऐसी शिक्षा का परिणाम विवाद और कलह होती है। कलीसिया में विवाद और मसीहियों के बीच में कलह। पौलुस कलीसिया में इन झूठे शिक्षकों के पाँच विभिन्न प्रभावों को बताता हैः *"डाह, मतभेद, निन्दा, बुरे–बुरे सन्देह, और झगड़े,"* ये सब अधर्मी मनों और अधर्मी जीवनों की ओर ले जाते हैं।

अतः, इन पहले कुछ वचनों में पौलुस तिमुथियुस से अनुरोध कर रहा है, जैसे हमने पहले अध्याय में उसे करते हुए देखा था, वह एक सरल उपदेश देता हैः सुसमाचार में सन्तुष्ट रह। पद तीन में वह कहता है, "प्रभु यीशु मसीह की बातों और उस उपदेश को थामे रह, जो भक्ति के अनुसार है।" पौलुस कहता है, "किसी ओर बात की ओर आगे बढ़ने की जरूरत नहीं है, वहीं रह। अपना जीवन यहीं बिता। यहाँ की कलीसिया को यीशु मसीह के सुसमाचार से भर। अपने आप को मसीह के जीवन, मसीह की मृत्यु, मसीह के पुनरूत्थान, मसीह की आज्ञाओं, मसीह की शिक्षाओं और मसीह के वचन से भर। मसीह के सुसमाचार और इस सुसमाचार को थामे रह।" पौलुस कहता है, "किसी बात की लालसा रखने की जरूरत नहीं है। सुसमाचार में सन्तुष्ट रह।"

अतः, यह पौलुस की पहली चेतावनी और उपदेश है, और यह सीधे दूसरी की ओर लाती है। इन झूठे उपदेशकों द्वारा सिखाई जाने वाली बातों और उनके जीने के तरीकों के बीच के संबंध को देखें। पद पाँच उनके बारे में बात करता है, जिनमें *"व्यर्थ रगड़े–झगड़े उत्पन्न होते हैं, जिन की बुद्धि बिगड़ गई है और वे सत्य से विहीन हो गए हैं, जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है।"* यहाँ "कमाई" शब्द आर्थिक आशयों से भरा है। भक्ति, आर्थिक लाभ का एक माध्यम। इन झूठे उपदेशकों का सोचना और सिखाना यह था कि परमेश्वर आर्थिक लाभ का एक माध्यम है। परमेश्वर के लिए जीने का अर्थ है परमेश्वर और आर्थिक लाभ। यह स्वास्थ्य/संपत्ति/समृद्धि के सुसमाचार का पहली सदी का संस्करण है, और हमारे अपने दिलों का पहली सदी का दर्पण है। परमेश्वर और वस्तुओं के लिए जीना। परमेश्वर, आर्थिक लाभ का माध्यम।

भौतिक संपत्ति की लालसा न करो।

अतः, पौलुस हमें दूसरी लालसा, एक खतरनाक विनाशकारी लालसा के बारे में चेतावनी देता है। वह और बाइबल स्पष्टता से कहते हैं, "भौतिक संपत्ति की लालसा न करो।"

अब, मैं यहाँ स्पष्ट रहना चाहता हूँ। जैसे पौलुस इस परिच्छेद में पद 17 में स्पष्ट है, कि परमेश्वर *"परमेश्वर हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है।"* दूसरे शब्दों में, संपत्तियाँ अपने आप में बुरी नहीं हैं। इसके बारे में हम अगले सप्ताह और अधिक बात करेंगे। परमेश्वर हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है। अतः, धन और संपत्ति अपने आप में बुरे नहीं हैं। पद दस में, पौलुस यह नहीं कहता है, "धन हर प्रकार की बुराईयों की जड़ है।" वह क्या कहता है? वह कहता है, "धन का प्रेम हर प्रकार की बुराईयों की जड़ है।" वह यह नहीं कहता है कि धन बुरा है। वह कहता है कि संपत्ति की इच्छा, धन की लालसा, वस्तुओं की लालसा, अगली वस्तु को पाने की इच्छा, बेहतर घर, बेहतर वस्त्र पाने की लालसा, अधिक पाने की लालसा रखना खतरनाक है। पौलुस कहता है, "भौतिक संपत्ति की लालसा मत करो।"

यही चेतावनी है। हमारे पास वहाँ जाने का समय नहीं है, परन्तु यह उसके समान ही है जो यीशु ने मत्ती 6:19–21 में कहा है, *"अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहाँ कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।"*

यह एक डरावना कथन है। क्या आपने इसे सुना? जहाँ आपका धन है, वहीं आपका मन भी होगा। अतः, इसे सुनेंः आपका धन आपके मन का संकेत देता है। इस संस्कृति में यह एक भयानक यथार्थ है। आपकी चेकबुक आपके मन की झलक दिखाती है। आपने वस्तुओं में कितना अधिक धन लगाया है, वह दिखाता है कि आपका मन वस्तुओं में कितना अधिक है। आप कहेंगे, "नहीं, मुझे धन से प्रेम नहीं है।" बाइबल आप से अपने हृदय में झाँकने के लिए कहती है। स्पष्ट है कि आप यह नहीं कहना चाहते कि आपको धन से प्रेम है। मैं नहीं कहना चाहता कि मुझे धन से प्रेम है, लेकिन जब मैं अपने धन खर्च करने के तरीके को देखता हूँ, तो मैं यह दिखाता हूँ कि मेरा मन कहाँ हैं। *"जहाँ तेरा धन है, वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।"*

मत्ती 6 में यीशु द्वारा और 1 तिमुथियुस 6 में पौलुस द्वारा कही गई बात हमारे लिए बहुत अजीब है क्योंकि हम धन को हमेशा एक आशीष के रूप में देखते हैं, और यह एक आशीष है। धन बहुत से अच्छे तरीकों से एक आशीष है। परन्तु, पवित्रशास्त्र, परमेश्वर का वचन हमें सिखाता है कि धन परमेश्वर के साथ आपके संबंध में और अनन्त जीवन के आपके अनुभव में अवरोध बन सकता है। पौलुस इसे जानता है, इसलिए भौतिकता के संबंध में वह हमें तीन चेतावनियाँ देता है। हे परमेश्वर, हमें इन चेतावनियों को सुनने, ध्यान देने और मानने का अनुग्रह दें। हम भौतिकतावादी लोग हैं। मैं एक भौतिकतावादी व्यक्ति हूँ। हम इन बातों को भूल जाते हैं। मैं इन बातों को भूल गया हूँ। भाइयो और बहनो, हम एक भौतिकतावादी संसार में डूबे हैं। इसे सुनें।

<u>भौतिकता छलावा है।</u> अब, हम एक मिनट में पौलुस के उपदेश पर वापस लौटेंगे परन्तु यहाँ चेतावनी की भाषा को सुनें। पद नौ को देखेंः "पर जो धनी होना चाहते हैं वे ऐसी परीक्षा, फन्दे में...फँसते हैं..." पौलुस कहता है, यह एक फन्दा है। भौतिकता, वस्तुओं की लालसा, धन, संपत्ति, बड़ी और बेहतर वस्तुओं की लालसा, यह एक जाल है; एक फन्दा है। भौतिकता समुद्री जल को पीने के समान है। आप प्यासे हैं। समुद्र में बहुत सारा जल है। इसलिए, मैं इसमें से कुछ पीता हूँ। समुद्री जल में नमक का घनत्व इतना अधिक है कि आप जितना अधिक उसे पीते हैं, आपकी प्यास और आपके शरीर की स्वच्छ जल की जरूरत उतनी ही अधिक बढ़ती जाती है। आप यह नहीं सोचते हैं, "यह बुरा होगा।" आप बस उसे पी लेते हैं। आप सोचते हैं यह पानी आपके लिए अच्छा होगा और आप इसे पी लेते हैं, परन्तु जितना अधिक आप इसे पीते हैं, आपके शरीर में पानी उतना ही कम होता जाता है। यदि आप इसे पीते रहते हैं, तो आप को सिरदर्द, मुँह का सूखना, निम्न रक्तचाप, और फिर दिल की धड़कन में तेजी से वृद्धि, इत्यादि परेशानियाँ होने लगती हैं, और आप बेहोश हो सकते हैं, और यदि आप इसे पीते रहते हैं तो आप मर जाएँगे। यह आश्चर्यजनक

है। आप पानी को देखते हैं और सोचते हैं, "मुझे यही चाहिए।" लेकिन, जब आप इसे पीते हैं, तो आप अनजाने में अपने शरीर को मार रहे हैं।

यही धन और संपत्ति के साथ है। आप इसे देखते हैं और सोचते हैं, "मुझे यह चाहिए।" परन्तु, आपको यह अहसास नहीं होता है कि यह एक फन्दा है और जितना अधिक आप इसमें फँसते हैं उतना ही अधिक यह आपकी आत्मा को मारता है। वस्तुओं, धन, और संपत्तियों का प्रेम एक छलावा है।

भौतिकता खतरनाक है। पौलुस कहता है, यह व्यक्ति को बहुत सी हानिकारक इच्छाओं की ओर ले जाती है। भौतिकता आपको ऐसे रास्ते पर ले जाती है, जो खतरे से भरा है। सोचें कि भौतिकता, वस्तुओं की लालसा आपको कहाँ ले जाती है। सूची लम्बी है और यह झकझोरने वाली है। यह बढ़ती जाती हैः स्वार्थ, छल, धोखा, चोरी, ईर्ष्या, झगड़ा, घृणा, हिंसा, और हत्या। कितने अधिक वैवाहिक विवाद धन के कारण होते हैं? अश्लीलता इसी से प्रेरित है। कमजोर का शोषण होता है और उन्हें ब्लैकमेल किया जाता है। गरीबों का दमन, अनैतिकता और अन्याय। भौतिकता दूसरे हजारों–हजार पापों को जन्म देती है। क्या आप और मैं इतने मूर्ख हैं कि हम अपने आप को इन बातों से ऊपर मानते हैं?

यहाँ, पूरे पवित्रशास्त्र में दी गई चेतावनियों को देखें। यहोशू 7 याद है? आकान संपत्तियों को देखता है। वह केवल कुछ वस्तुओं को देखता है जिन्हें वह युद्ध की लूट में से अपने पास रखना चाहता है, और वह उन्हें अपने पास रख लेता है और छिपा लेता है। उसके परिणामस्वरूप, वह और उसका पूरा परिवार मारा जाता है। धन और संपत्तियों की लालसा के कारण राजा सुलैमान बर्बाद हो गया, और पुराने नियम के अन्य राजा भी। वे बर्बाद हो गए। यह केवल पुराने नियम में ही नहीं है, नये नियम में भी है। मत्ती 10 में यीशु कहते हैं कि धनवानों का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। लूका 6 में यीशु ने कहा, "परन्तु हाय तुम पर; जो अब तृप्त हो, क्योंकि भूखे होगे।" याकूब 5: *"हे धनवानो सुन तो लो; तुम अपने आने वाले क्लेशों पर चिल्लाकर रोओ। तुम्हारा धन बिगड़ गया और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गए। तुम्हारे सोने–चाँदी में काई लग गई है; और वह काई तुम पर गवाही देगी, और आग की नाईं तुम्हारा माँस खा जाएगी, तुमने अन्तिम युग में धन बटोरा है।"* तुमने पृथ्वी पर भोग–विलास का जीवन बिताया।

यह पूरे पवित्रशास्त्र में है। भौतिकता खतरनाक है। केवल अभी नहीं लेकिन हमेशा के लिए। भौतिकता छलावा है, भौतिकता खतरनाक है, और भौतिकता विनाशकारी है। *"पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुतेरी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फँसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं*

और विनाश के समुद्र में डूबा देती हैं।" यह गम्भीर है। यह अत्यधिक गम्भीर है। यह केवल धन की लालसा से है। उनके बारे में क्या जिनके पास पहले से ही धन है और जिनके मन पहले से अपने धन से बँधे हुए हैं? भौतिकता मुझे और आपको बर्बादी और विनाश में डुबा देती है। आप डूब जाते हैं, तल की ओर खींच लिए जाते हैं। वस्तुओं का प्रेम और अधिक पाने की लालसा आपको हमेशा के लिए डुबा देगी।

हम जानते हैं कि हम अनन्त जीवन के बारे में बात कर रहे हैं, सातवें वचन के आधार पर जहाँ पौलुस कहता है कि तुम इस संसार से कुछ भी लेकर नहीं जाओगे, अर्थात्, इस जीवन के समाप्त होने के बाद, इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि आपके पास क्या कुछ था। संपत्तियाँ आपको अपने जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पल में हमेशा नीचा दिखाएँगी जब आप मृत्यु में प्रवेश करते हैं। वे आपको कुछ नहीं देंगी। इसीलिए बाद में पद 12 और 16 में पौलुस कहता है, अनन्त मृत्यु के विपरीत अनन्त जीवन को थामो।

अतः, इसे सुनें। बाइबल इस तरह कहती है। मैं केवल संसार भर की प्रमुख जरूरतों के कारण आपके सामने इस तरह से बात नहीं कर रहा हूँ। बाइबल इस तरह से बात करती है, और मैं इस तरह से बात कर रहा हूँ क्योंकि मैं आपकी आत्माओं के बारे में चिन्तित हूँ। यह कहने में कुछ भी नाटकीय नहीं है कि धन के प्रयोग करने का आपका तरीका आपको हमेशा के लिए बना या तोड़ देगा। यह मारता है। यह नष्ट करता है। यह खतरनाक और विनाशकारी है। आप अपना मन वस्तुओं और संपत्तियों और इस समाज के धन पर लगाएँ, यह आपको नष्ट कर देगा और आप पूरे समय यही सोचते रहेंगे कि आप सही हैं। इसलिए, मैं कहता हूँ कि आप भागें। ऐसी किसी भी बात से भागें जो धन के प्रेम के निकट है। धन के प्रेम से परमेश्वर के प्रेम की ओर भागें और उपदेश यही है। अतः, भौतिकता छलावा है, खतरनाक है, और विनाशकारी है।

<u>उपदेशः परमेश्वर में सन्तुष्ट रहो।</u> सन्तोष सहित भक्ति लाभ है। बड़ी कमाई है। यह एक अच्छा वाक्यांश है। पौलुस लिखता है, कमाई। मैं उसे लिखते हुए कल्पना कर सकता हूँ। "नहीं। यह केवल कमाई नहीं है। यह बड़ी कमाई है।" पौलुस यह नहीं कहता है, "मसीहियो, कमाई के लिए जीना बन्द कर दो। अभागे बने रहो।" वह कहता है, "मसीहियो, असली कमाई के लिए जीना शुरू करो। मसीह ही कमाई है।" पौलुस कहता है, "यथार्थ लाभ के लिए जीयो। परमेश्वर में लाभ। धन के प्रेम से सन्तुष्ट न रहो। परमेश्वर के प्रेम में सन्तुष्ट रहो।"

यह इस संस्कृति में जीने का बहुत अलग तरीका है। लिखा है, "सन्तोष सहित भक्ति।" किसी अन्य लालसा के साथ भक्ति नहीं परन्तु परमेश्वर में आराम, आनन्द और खुशी और सन्तुष्टि के साथ भक्ति। क्योंकि परमेश्वर में, आप इस संसार की वस्तुओं की लालसा से आजाद होते हैं। आपके पास परमेश्वर है। क्या फिलिप्पियों 4 में पौलुस ने यही नहीं कहा है? *"मैं ने कमी और बहुतायत में सन्तुष्ट रहने का रहस्य पा लिया है।"* रहस्य यह है: *"मुझे सामर्थ देने वाले के द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूँ।"* इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मेरे पास क्या है। मेरे पास मसीह है; मेरे पास वह सब है जो मैं चाहता हूँ, वह सब है जिसकी मुझे जरूरत है। फिलिप्पियों 4:19 में वह कहता है, *"मेरा परमेश्वर मसीह यीशु में अपनी महिमा के धन के अनुसार मेरी सारी जरूरतों को पूरा करेगा।"* जब मसीह यीशु में आपके पास धन और महिमा है तो हे मसीहियो, आपको इस संसार में धन के लिए जीने की क्या जरूरत है? इसका कोई मतलब नहीं है। जब आप यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर लाभ है, तो आप संसार में बिल्कुल अलग तरीके से जीते हैं। आप सादगी से जीते हैं। यही पौलुस का उपदेश है। आठवाँ वचनः *"यदि हमारे पास भोजन और वस्त्र हैं, तो हम इनसे सन्तुष्ट रहेंगे।"* पौलुस कहता है इन मूलभूत वस्तुओं से सन्तुष्ट रहो। जरूरतें पूरी होती हैं। पौलुस कहता है, मसीही लोग सादगीपूर्ण जीवन से सन्तुष्ट हो सकते हैं और होना चाहिए। भण्डारण की संस्कृति में, जहाँ हमेशा अधिक और अधिक की इच्छा रहती है, हमेशा खपत होती है, हमेशा अगली सौदेबाजी पर ध्यान दिया जाता है, उनके बीच में हम कहते हैं, "हमें अधिक की जरूरत नहीं है, और हम अधिक नहीं चाहते हैं।"

इससे न चूकें। इसके बारे में सोचें। क्या परमेश्वर आप से प्रेम करता है? हाँ। क्या परमेश्वर आपकी जरूरत को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है? हाँ। तो, जब हम ऐसी बातों को बाइबल में देखते हैं तो इन बातों को हमें अभागा बनाने के लिए नहीं लिखा गया है। ये बातें हमें खुश बनाने के लिए लिखी गई हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम खुश रहें और वह जानता है कि हमारी खुशी उसमें पाई जाती है। इसलिए, हमें वस्तुओं से दूर बुलाता है क्योंकि उनसे हमें खुशी नहीं मिलेगी; यह छलावा है, खतरनाक है और विनाशकारी है। परमेश्वर आनन्ददायक है। क्या हमें उस पर विश्वास है? क्या हम वास्तव में उस पर विश्वास करते हैं? क्या हमें वास्तव में भरोसा है कि वह हमारा सन्तोष है? यदि ऐसा है, तो हम इस समुदाय में, इस संस्कृति की धार के विपरीत चलेंगे। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह आसान है।

तो, क्या आपके पास एक अच्छा सेलफोन है? इसके बारे में 1 तिमुथियुस 6 में नहीं बताया गया है। यह शायद भोजन और वस्त्र के समान स्तर पर नहीं है। क्या इसका मतलब यह है कि एक अच्छे फोन का होना बुरा है? मैं नहीं जानता। यहाँ, किसी भी अर्थ में, व्यवस्थावादी माप नहीं है। यदि होता, तो हम पूरे

बिन्दू से ही चूक जाते। आज का पूरा बिन्दू केवल यह है कि आप अपने दिल को देखें। हर दिन अपने मन को देखें और कहें, "मसीह, मैं चाहता हूँ आप मेरा सन्तोष; मेरी सन्तुष्टि बनें।" जब आपके मन में किसी वस्तु की, अधिक पाने की इच्छा आती है, तो कहें, "मसीह, आप मेरे लिए काफी हैं। आप मेरी सन्तुष्टि हैं। क्या आपके द्वारा दिए गए संसाधनों के उपयोग का कोई बेहतर तरीका है? या क्या यह बुद्धिमानी है? क्या यह अच्छा है?"

सादगीपूर्ण जीवनशैली के प्रति समर्पित सुसमाचारियों की ओर से सबसे अच्छी मार्गदर्शिका जिसे मैं ने आज तक पढ़ा है, उसे तीस वर्ष पूर्व वैश्विक सुसमाचार पर लुसेन सभा द्वारा तैयार किया गया था। उसमें बताया गया था,

> हम व्यक्तिगत जीवन, वस्त्र और आवास, यात्रा एवं कलीसियाई भवनों पर बेकार और फिजूलखर्च का विरोध और परित्याग करने का निर्णय लेते हैं। हम आवश्यकताओं और भोग–विलास, रचनात्मक आदतों और खोखली प्रतिष्ठा के प्रतीकों, शालीनता और मिथ्याभिमान, कभी–कभार होने वाले समारोहों और दैनिक दिनचर्या, एवं परमेश्वर की सेवा और फैशन की गुलामी के बीच में भी अन्तर करते हैं। यह जानने के लिए हमारे द्वारा परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर सोचने और निर्णय लेने की जरूरत है कि सीमा रेखा कहाँ खींचनी है।

विश्वास के परिवार के रूप में मैं कहना चाहूँगा कि एक कलीसिया के रूप में हम इन क्षेत्रों में एक–दूसरे की सहायता करना चाहते हैं। परमेश्वर के वचन के अधिकार के आधार पर मैं हम सबसे यह माँग करना चाहता हूँ कि हम इस संस्कृति और इस समुदाय एक अलग तरह का जीवन बिताएँ। सादगी से रहें। जरूरी वस्तुओं से सन्तुष्ट रहें। सुख–सुविधाओं को त्यागें क्योंकि आप परमेश्वर में सन्तुष्ट हैं। सादगी से जीएँ।

<u>त्यागपूर्वक दें।</u> इसके बारे में हम अगले सप्ताह विस्तार से देखेंगे। जब आप पद 17–19 पर आते हैं, सुनें पौलुस क्या कहता है:

> *इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से*

देता है। और भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें, और उदार और सहायता देने में तत्पर हों। और आगे के लिए एक अच्छी नींव डाल रखें, कि सत्य जीवन को वश में कर लें।

सादगी से जीएँ, और फिर अत्यावश्यक आत्मिक एवं शारीरिक आवश्यकताओं वाले संसार में मसीह की महिमा के लिए त्यागपूर्वक दें। यह हमारे लिए और हमारे परिवारों के लिए 1 तिमुथियुस 6 का व्यवहारिक पाठ है। इसीलिए, पिछले कुछ वर्षों से हम अधिक से अधिक सुविधाओं के बारे में सोचने की बजाय हम अपने बजट को सीमित कर रहे हैं, एक सीमा रेखा बना रहे हैं, और एक कलीसिया के रूप में एक–दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं। हमने कहा, "चलो हम देखते हैं कि क्या हम जरूरी वस्तुओं के साथ सन्तुष्ट रह सकते हैं, ताकि हम जहाँ तक संभव हो सके, अधिक से अधिक बचत कर सकें। ताकि हम अत्यावश्यक आत्मिक एवं भौतिक जरूरतों से भरे संसार में मसीह की महिमा के लिए त्यागपूर्वक दे सकें।" इससे हमें कुछ करने की अगुवाई मिली है, और यह आसान नहीं रहा है; कई बार इसे करना कठिन था, लेकिन यह करने के योग्य है। हमारे मनों की रक्षा करना। मसीह की महिमा के लिए देना। हमारे परिवारों में इसे करना। यह कहना, "हमारे परिवारों में, एक ऐसी संस्कृति में, जहाँ अधिक आय होने पर जीवन का स्तर ऊँचा होता है। आप कहें, नहीं। नहीं, हम सन्तुष्ट रहेंगे। हम उस सन्तुष्टि की सीमा रेखा को बनाए रखेंगे।" पुनः, मैं यह नहीं बता रहा हूँ कि यह कैसा होगा। हम अपने आप को त्यागपूर्वक और उदारता से देने के लिए मुक्त करने जा रहे हैं, उस सीमा से ऊपर जितना है, वह सब मुक्त करने जा रहे हैं। हम भक्ति को आर्थिक लाभ के माध्यम के रूप में नहीं परन्तु त्यागपूर्वक देने की प्रेरणा के रूप में देखेंगे।

एक बात जो इसका अध्ययन करते समय और अपने स्वयं के मन की जाँच करते समय मेरे मन में आई। कुछ लोगों द्वारा मुझ पर आरोप लगाया गया था कि मैं ने कट्टर होने के बारे में कुछ पुस्तकों को आर्थिक लाभ के लिए लिखा था। उनका कहना है, "अमरीकी सपने के विरूद्ध लिखते समय अमरीकी सपने के अनुसार जीना अवश्य ही बहुत अच्छा होगा।" भाइयो और बहनो, मैं आपको निश्चय दिलाना चाहता हूँ कि उससे मिलने वाले हर एक पैसे को खुशी से राष्ट्रों में मसीह की महिमा के लिए दिया जा रहा है। मैं चाहता हूँ आप इसे जानें। बिल्कुल उसी तरह जैसे नये नियम में पौलुस कहता है, "मैं चाहता हूँ कि तुम जानो कि यहाँ आर्थिक रूप से क्या हो रहा है क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मुझ पर सुसमाचार को बेचने का आरोप लगे।" मैं कभी भी नहीं चाहता कि मुझ पर सुसमाचार को बेचने का, आर्थिक लाभ के लिए परमेश्वर के सुसमाचार का प्रयोग करने का आरोप लगे। मैं चाहता हूँ आप इसे जानें कि वह सब दूसरों को दिया जा रहा है और मसीह की महिमा के लिए देने में गहरा आनन्द है।

अतः, सादगी से जीएँ। पौलुस कहता है, त्यागपूर्वक दो, और अनन्त रूप से फलो–फूलो। भले कार्यों में धनी बनो, बाँटने की इच्छा रखो और उदार बनो और इस प्रक्रिया में, "तुम अपने भविष्य की अच्छी नींव के लिए धन एकत्रित कर रहे हो, ताकि उसे पकड़ सको जो वास्तव में जीवन है।"

सादगी से जीयो। त्यागपूर्वक दो। अनन्त रूप से फूलो–फलो। आपको यह तस्वीर याद है। जॉन वेस्ली के बारे में याद है? हम इसके बारे में बात कर चुके हैं। कुछ वर्षों पूर्व हमने इसके बारे में बात की थी। यह केवल एक दोहराव है। 1731 में, वेस्ली अपने खर्चों को कम करने लगा ताकि गरीबों को देने के लिए उसके पास अधिक धन हो। एक साल में उसकी आमदनी 30 पाउण्ड थी और उसका खर्च 28 पाउण्ड था। अतः, देने के लिए उसके पास दो पाउण्ड थे। अगले वर्ष उसकी आमदनी दोगुनी हो गई, फिर भी उसने केवल 28 पाउण्ड खर्च किए और 32 पाउण्ड दे दिए। तीसरे साल, उसकी आमदनी बढ़कर 90 पाउण्ड हो गई, पुनः उसने केवल 28 पाउण्ड खर्च किए और 62 पाउण्ड दे दिए। चौथे साल, उसने 120 पाउण्ड कमाए और 92 पाउण्ड गरीबों को दे दिए। वेस्ली ने प्रचार किया कि मसीहियों को केवल दसवाँश ही नहीं परन्तु परिवार और लेनदारों को निपटाने के बाद बची हुई सारी रकम को दे देना चाहिए। उसका विश्वास था कि आमदनी बढ़ने के साथ मसीही का देने का स्तर बढ़ना चाहिए, न कि उसके जीने का स्तर। उसने ऑक्सफोर्ड में ऐसा करना शुरू किया और अपने जीवन भर ऐसा करता रहा। हजारों पाउण्ड की आमदनी होने पर भी वह सादगी से जीता रहा और शेष धन को वह तुरन्त ही दूसरों को दे देता था। एक वर्ष में उसकी आमदनी 1,400 पाउण्ड से थोड़ी अधिक थी; उसने 30 पाउण्ड को छोड़कर बाकी सब दे दिया। वह पृथ्वी पर धन इकट्ठा करने से डरता था इसलिए जैसे ही धन आता, वह उसे दूसरों को दे देता था। 1791 में उसकी मृत्यु के समय, उसकी वसीयत में केवल कुछ सिक्कों का वर्णन था, जो उसकी जेबों और अलमारियों में मिले थे। उसके पास केवल कुछ सिक्के ही थे। अपने जीवन में कमाए गए 30,000 पाउण्ड में से अधिकाँश उसने दे दिए थे। आप उस धन को आज की मजदूरी के हिसाब से देखें, एक समय उसकी आमदनी एक लाख साठ हजार डॉलर प्रतिवर्ष थी, लेकिन वह केवल 20,000 डॉलर प्रतिवर्ष पर जीवन निर्वाह कर रहा था। यह अजीब है।

आप इस तरह से क्यों जीते हैं? आपको यह पसन्द है क्योंकि सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। लोग इस विचार पर ताना मारते हैं परन्तु यदि परमेश्वर आपको अधिक इसलिए देता हो कि आप अपने देने के स्तर को बढ़ाएँ, न कि जीवन के स्तर को, तो? यदि हम इस प्रकार सादगी से जीते और त्यागपूर्वक देते हैं तो क्या होगा? क्या विश्वास का यह समुदाय ऊपर उठकर उन भौतिक संपत्तियों के घातक खतरे से मुक्त

हो सकता है जिसने कभी हमें अन्धा कर रखा था और क्या हम संसार की आत्मिक और भौतिक जरूरतों के बीच में सुसमाचार को फैलाने में हिस्सेदार बन सकते हैं?

लोग कहते हैं, "यहाँ तुम्हें सावधान रहना चाहिए। अत्यधिक चरम की ओर मत जाओ। यदि लोग अपना सब कुछ बेचने लगें और परिवार की भौतिक आवश्यकताओं को अनदेखा करने लगें, तो क्या होगा?" भाइयो और बहनो, अपने चारों ओर नजर डालें। हम इसे करने के खतरे में नहीं हैं। जब हम वहाँ पहुँच जायेंगे, तो हम उसके बारे में बात करेंगे। वचन हमें वहाँ पहुँचने से बचाएगा लेकिन हम इतनी अधिक चिन्ता न करें। क्या आप वास्तव में सोचते हैं कि एक दिन हम मसीह के सामने खड़े होंगे और उसे यह कहते हुए सुनेंगे, "मुझे तुम्हारे विरूद्ध एक बात कहनी है। तुमने मेरी महिमा के लिए बहुत अधिक दिया। उसकी बजाय तुम्हें अपने लिए अधिक रखना चाहिए था।"

यीशु कभी भी एक व्यक्ति को बहुत अधिक देने और बहुत कम रखने के कारण मूर्ख नहीं कहते हैं। उसने बहुत अधिक रखने और बहुत कम देने के कारण किसी को मूर्ख नहीं कहा। यह इसके योग्य है। यह करने के योग्य है इसलिए पिछले सप्ताह बिहार, भारत में रहने वाले एक भाई से हुई मेरी बातचीत के आधार पर मैं आप को प्रोत्साहित करना चाहता हूँ। एक कलीसिया के रूप में हमने निर्णय लिया था, "हम हमारे खर्चों को कम करना चाहते हैं और जितना संभव हो, अधिक से अधिक देना चाहते हैं।" उसके कारण विभिन्न स्तरों पर आलोचना हुई, लेकिन पिछले सप्ताह भारत के बिहार में रहने वाले एक भाई से मेरी बातचीत हुई। वह बहुत गरीब है। वहाँ 0.01 प्रतिशत से भी कम मसीही हैं; लगभग 5,000 लोग प्रतिदिन अनन्त नरक में जा रहे हैं। अतः, उसके परिणामस्वरूप एक छोटे भाग के रूप में हमने "कट्टर प्रयोग" में उस क्षेत्र में रहने वाले कुछ भाइयों और बहनों के साथ साझेदारी की, और उनके लिए प्रशिक्षण और चेले बनाने का कार्य कर रहे हैं।

मेरे विचार से मैं ने आपको यह कहानी बताई है कि कैसे एक पासबान, राजेश इस प्रशिक्षण में गए थे। उनकी आशा समाप्त हो चुकी थी। पूरी तरह निराश थे, और हार मानने के लिए तैयार थे। जब हम इस चेले बनाने के कार्यक्रम में प्रशिक्षण दे रहे थे, तो उन्हें एक ऐसे गाँव को खोजने के लिए कहा गया जहाँ सुसमाचार की जरूरत थी और जहाँ सुसमाचार का कोई ज्ञान नहीं था। उस गाँव में जाकर, प्रवेश करते समय, मिलने वाले पहले व्यक्ति से कहना था, "मैं यीशु के नाम से यहाँ आया हूँ और मैं इस गाँव के लोगों के लिए प्रार्थना करना चाहता हूँ।" राजेश ने सोचा यह पागलपन है, और इससे कुछ नहीं होगा। उसने सोचा, "मेरे पास और कोई काम नहीं है, इसलिए मैं जाऊँगा।" वह गाँव में जाता है, पहले व्यक्ति से मिलता

है, "नमस्कार, मैं यीशु के नाम में यहाँ आया हूँ। मैं इस गाँव के लिए प्रार्थना करना चाहता हूँ।" उस व्यक्ति ने कहा, "कौन, यीशु? मैं उसके बारे में और अधिक सुनना चाहता हूँ।" राजेश ने पूछा, "सच?" उसने कहा, "हाँ, लेकिन रूको। मैं कुछ और लोगों को बुलाकर लाता हूँ।" अतः, राजेश उस व्यक्ति के घर जाता है और वह व्यक्ति अपने परिवार और दोस्तों को बुलाता है। कुछ ही सप्ताहों में, इस गाँव में 25 लोगों ने उद्धार के लिए यीशु मसीह पर विश्वास किया।

इतना मैं ने सुना था। बिहार के जिस भाई से मैं पिछले सप्ताह बात कर रहा था, उसने मुझे बताया कि उस दिन से, विश्वासियों का वह समूह बाहर जाकर उसी कार्य को कर रहा है। उस एक गाँव से अब 147 अलग–अलग कलीसियाएँ स्थापित की जा चुकी हैं।

भाइयो और बहनो, यह करने के लायक है। यहाँ छोटे–छोटे त्याग करना जिनसे न केवल संसार भर में, बल्कि हमारे जीवनों में भी बड़े फल उत्पन्न हों। क्या यह अच्छा नहीं है? यह आनन्द है। यह खुशी है। जब आप मृत्यु का सामना करते हैं तो आप अपनी संपत्ति को अपने साथ नहीं ले जायेंगे, लेकिन हम बिहार के अपने भाई को, संसार भर के हमारे भाइयों और बहनों को अपने साथ ले जायेंगे। उनके शारीरिक कष्ट में हम उनके साथ रहे, और सुसमाचार की जानकारी के अभाव में उनकी आत्मिक गरीबी में हमने उनका साथ दिया। यह योग्य है। इस संस्कृति में बिल्कुल अलग तरीके से जीना और कलीसिया को अलग तरीके से चलाना, बेकार नहीं है। सादगी से जीना। त्यागपूर्वक देना। अनन्त रूप से उन्नति करना।

अपना जीवन लगा दो...

सुसमाचार को भला घोषित करने में!

अतः, आइए हम अपना जीवन दे दें। दो बातेंः सुसमाचार को भला घोषित करना। यह सुसमाचार बहुत अच्छा है। हम अपना जीवन और अपनी संपत्तियाँ से सुनाने में लगाना चाहते हैं। यह खुशखबरी है! 2 कुरिन्थियों 8:9, मसीह *"धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।"* बाइबल देहधारण का वर्णन धन और निर्धनता की भाषा में करती है। मसीह का कंगाल बनना, हमारे पापों को अपने ऊपर लेना, ताकि हम मसीह की धार्मिकता बन जाएँ। संसार के प्रत्येक व्यक्ति और इस ग्रह की प्रत्येक जाति से यह कहना कि एक खुशखबरी है। एक अनन्त खुशखबरी है। परमेश्वर

आया। तुम आत्मिक और शारीरिक रूप से भूखे थे। परमेश्वर आया। वह तुमसे प्रेम करता है। वह तुम्हारी चिन्ता करता है। वह कंगाल बना, ताकि उसमें होकर तुम धनी बन जाओ; ताकि तुम उसे अब और हमेशा के लिए जान सको। उसके लोगों के रूप में, हम यहाँ पर यह बताने के लिए हैं कि वह आप से प्रेम करता है, और वह आपकी चिन्ता करता है। हमारे शहर में इसे करने के लिए, पृथ्वी की छोर तक और बीच के हर एक स्थान पर इसे करने के लिए, आइए हम सुसमाचार को भला घोषित करने के लिए जीएँ।

मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूँ। क्या एक भौतिकतावादी कलीसिया द्वारा एक भौतिकतावादी संसार को मसीह के लिए जीता जा सकता है? मुझे नहीं लगता। क्योंकि, पहली बात, जब तक हम भौतिकतावादी हैं, तब तक हम यह नहीं दिखा सकेंगे कि मसीह पूर्ण सन्तुष्टि देने वाला है। हम संसार को यह दिखाएँगे कि मसीह और वस्तुओं से सन्तुष्टि मिलती है, और यह सुसमाचार नहीं है। यदि हम कलीसिया को संसार की वस्तुओं से भर देंगे तो हम इस संसार की वस्तुओं को त्यागने में लोगों की अगुवाई कैसे करेंगे? क्या उसका वचन हमारे लिए पर्याप्त है? देखें, संसार भर में हमारे भाई और बहनें, गुप्त रूप से देर रात तक, और कई बार घण्टों तक एक साथ एकत्रित होते हैं, इसलिए नहीं कि नई गायन मण्डली और ध्वनि यंत्र बहुत अच्छे हैं। वे इसलिए एकत्रित होते हैं क्योंकि वे वचन को चाहते हैं। वे परमेश्वर को जानना चाहते हैं और उनके लिए परमेश्वर आर्थिक लाभ का माध्यम नहीं है।

दूसरा कारण, कि मैं इसे क्यों नहीं मानता कि एक भौतिकतावादी कलीसिया एक भौतिकतावादी संसार को मसीह के लिए जी सकती है, यह है कि मसीह के लिए संसार को जीतने के लिए जरूरी संसाधन हमारे दूसरे घरों और अच्छी संपत्तियों में लगे रहेंगे, और हम अपने सिक्कों को महान आज्ञा को पूरा करने के लिए देते रहेंगे। राल्फ विंटर्स ने कहा, "महान आज्ञा के प्रति आज्ञापालन में किसी भी और बात से बढ़कर प्रतिष्ठा द्वारा जहर घोला गया है।" इसलिए आइए हम इस सुसमाचार को भला घोषित करने में अपना जीवन और अपनी संपत्ति लगा दें और ऐसे जीएँ जैसे कि परमेश्वर हमारे लिए लाभ है।

ऐसे जीना जैसे कि परमेश्वर लाभ है!

आओ हम ऐसे जीएँ जैसे कि परमेश्वर लाभ है। यही संगति का मुख्य बिन्दू है। मसीह कंगाल बना, उसने अपना लहू बहाया, हमारे लिए अपना शरीर दे दिया, ताकि परमेश्वर से हमारा मेल हो जाए। आज सुबह के समय सैर करते हुए आकाश की ओर निहारते हुए सृष्टि की महिमा को देख रहा था। आकाश और बादल और उनकी रचना और यह जानना कि परमेश्वर ने उनमें से हर एक बादल को अपने हाथ से थाम रखा है, और वह उन्हें निर्देशित कर रहा है। उसी समय, वह मुझे भी सुन रहा है जब उसके लिए मैं उसकी स्तुति

करता हूँ। मैं सोचने लगा, हमारे पास परमेश्वर है। हमें इस संसार में अधिक वस्तुओं की क्या जरूरत है? आओ हम अपने दिल को अधिक वस्तुओं की बजाय परमेश्वर पर रखें। जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा मन भी लगा रहेगा। अतः, उसके आत्मा और उसके अनुग्रह के द्वारा, आइए हम देखें कि हमारा धन कहाँ है, और हमारा मन कहाँ है। आइए हम पूछें, "हम इस संसार की वस्तुओं से मुक्त होकर अपने दिलों को परमेश्वर और इस संसार में उसके कार्यों पर कैसे रख सकते हैं?" इस प्रक्रिया में, सुसमाचार में परमेश्वर की खुशी को अनुभव करें और सुसमाचार में परमेश्वर की महिमा को फैलाएँ।

Permissions: You are permitted and encouraged to reproduce and distribute this material provided that you do not alter it in any way, use the material in its entirety, and do not charge a fee beyond the cost of reproduction. For web posting, a link to the media on our website is preferred. Any exceptions to the above must be approved by Radical.

Please include the following statement on any distributed copy: By David Platt. © David Platt & Radical. Website: Radical.net